समुच्चय महार्घ

मै देव श्री अर्हन्त पूजूं सिद्ध पूजूं चाव सों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूं साधु पूजूं भावसों।।१।।
अर्हन्त-भाषित बैन पूजूं द्वादशांग रचे गनी।
पूजूं दिगम्बर गुरुचरन शिव हेतु सब आशा हनी।।२।।
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि दया-मय पूजूं सदा।
जजूं भावना षोडष रत्नत्रय, जा बिन शिव नहिं कदा।।३।।
त्रैलोक्यके कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूं।
पंच मेरु नन्दीश्वर जिनालय खचर सुर पूजित भजूं।।४।।
कैलाश श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूं सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा।।५।।
चौबीस श्री जिनराज पूजूं बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस-वसु जपि होय पति शिवगेह के।।६।।

दोहा

जल गंधाक्षत पुष्प चरु दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूज हूं बहु विधि भक्ति बढ़ाय।।७।।

ॐ ह्रीं महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

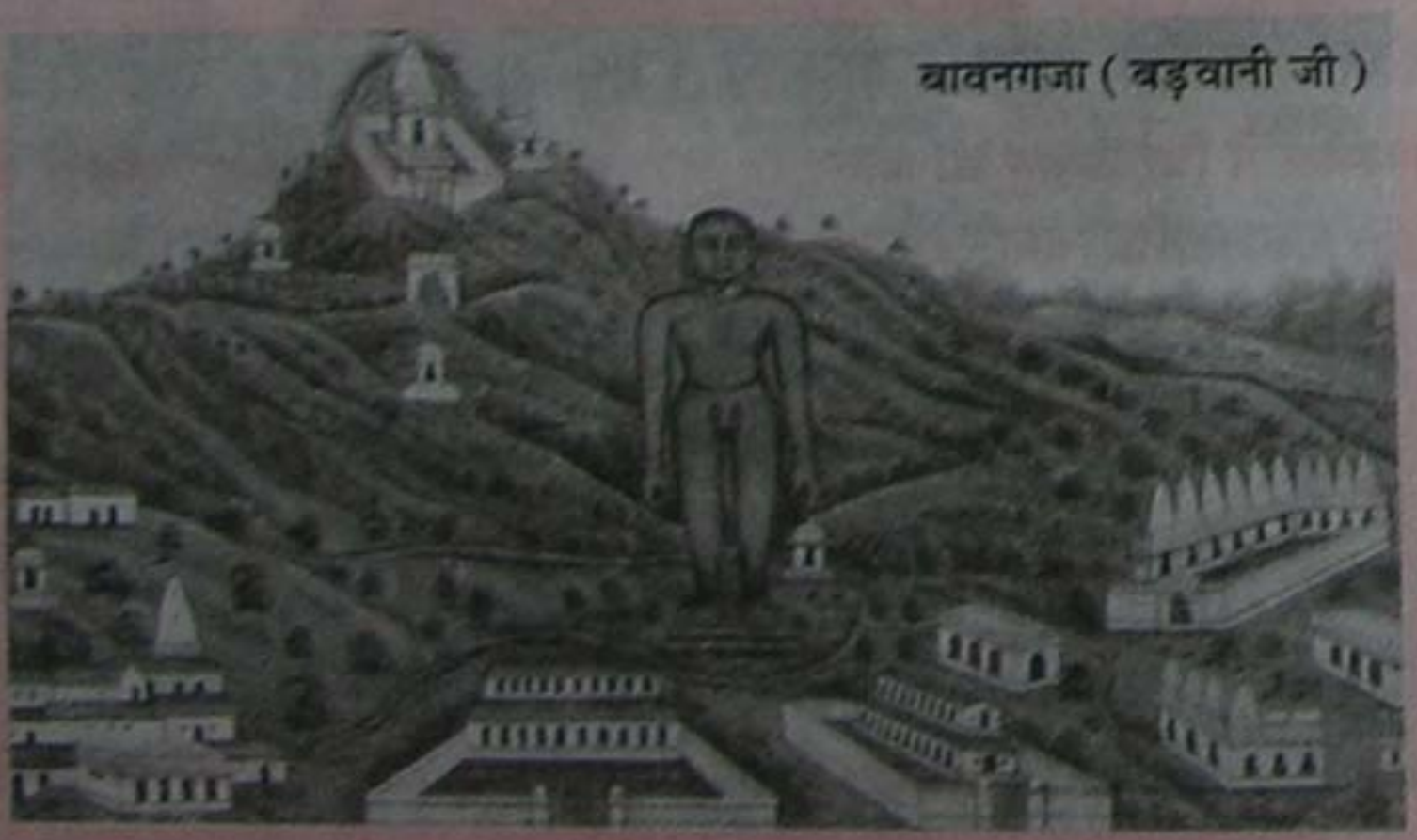

बावनगजा (बड़वानी जी)